

ब्रह्म ज्ञान योग संस्थान बिसवाँ सीतापुर



-सत्य पथ-

मन के सन्मुख हैं सभी, सन्मुख होना आत्म!

केवल इतनी बात पर, है पूरा अध्यात्म!!

आत्मा से बिमुख हो तुम, मन के सन्मुख हो अभी!

केन्द्र का तुम मार्ग पकड़ो, परिधि को छोड़ो अभी!!

केन्द्र के सन्मुख रहो, दृष्टि बदलकर तुम सदा!

सहज दृष्टि धार कर तुम, केन्द्र पर पहुँचो अभी!!

मन समर्पित स्वयं होगा, सत्य पथ जानो अभी!

हो जीव सन्मुख केन्द्र के, बिमुख फिर न हो कभी!!

" आत्मा " से होना बिमुख, सबसे बड़ा है पाप!

वेद, शास्त्र सब कह गये, जाने नहीं हो आप!!

आत्मा को न जानना, सबसे बड़ा है पाप!
काग भसुंडि जी कह गये, गरुड़ से खुद ही आप!!

महाभागवत में दिया, सूत जी ने यह ज्ञान!
आत्मा से होना बिमुख, यही महा अज्ञान!!

केवल चुनना कृष्ण को, महाभारत की सीख!
बिमुख हुए यदि कृष्ण से, माँगे मिले न भीख!!

कृष्ण, आत्मा एक है, इसको दो मत जान!
केवल आत्म बोध से, आत्म को पहिचान!!

चुनना हो यदि सारथी, चुनना केवल आत्म!
विजय श्री तुमको मिले, जीव भी हो एकात्म!!

दुर्योधन की हार का, कारण यही था जान!
सेना को ही मांगना, यही महा अज्ञान!!

दुर्योधन की हार का, भेद न जाने कोय!
सन्मुख रहते कृष्ण के, कभी हार न होय!!

आत्मा को ही जानना, सबसे बड़ा है पुण्य!
जानों केवल आत्मा, जानो न कुछ अन्य!!

भवसागर में डूबते, अरबों, खरबों जीव!
केवल आत्म जानकर, जीव से होंवे पीव!!

तीन लोक के ज्ञान को, कहते है अज्ञान!
इसीलिए तो मुख्य है, चौथे लोक का ज्ञान!!

इंद्रिय, मन और सुरत ही, यही तीन हैं लोक !
जीव को इससे निकलना, चौथा लोक अलोक!!

द्वैत का संसार यह, जिसमें भटकता तू पथिक!

मंजिल है क्या, और पंथ क्या, उद्देश्य क्या जानों पथिक!!

फिर यात्रा चालू करो, और पंथ को तुम जान लो!

आत्मा का पंथ पकड़ो, मन का पंथ छोड़ दो!!

जाके पहुँचो केन्द्र पर, मंजिल वही उद्देश्य है!

हो लक्ष्य पूरा जीव का, यात्रा हो पूरी जीव की!!

है सत्य केवल जानना, तू सत्य पथ को जान ले!

द्वैत में वह है नहीं, अद्वैत को पहचान ले!!

मन का मार्ग छोड़ के, यदि सत्य पथ पर तू चले!

उड़ के पहुँचे केन्द्र पर, माया का मार्ग छोड़ दे!!

तीन लोकों में न फंसना, काल, माया, द्वैत है!
लोक चौथा केन्द्र पर है, तू उसे पहिचान ले!!

तन, मन, सुरत यह तीन पद, यही तीन हैं लोक!
चौथा पद है आत्मा, जानो उसे अलोक!!

इंद्रियों से दृष्टि हटाओ, मन को कर दो शून्य!
सुरत को भी ठहराय दो, तीन लोक से भिन्न!!

जिस पथ में कुछ करना पड़े, सत्य पथ वह है नहीं!
जो बदलता और खण्डों में है, सत्य पथ वह भी नहीं!!

तू सहज होकर समर्पण , केन्द्र पर जो तू करे!
आत्मघट भी प्रकट हो, धार आत्म की गिरे!!

सत्य भी, निर्वाण भी, परमात्मा मिल जायेगा!
सद्गुरु को खोज कर, सत्य पथ को जान ले!!

चार पैर है धर्म के, कलि में एक विलुप्त!!
तीन पैर से चल रहा, जीव हो कैसे मुक्त!!

जो है पिंड ब्रम्हाण्ड सो, यही बताते वेद!
काया में ही जान लो, चार पैर का भेद!!

तन, मन, सुरत ही तीन पद, यही तीन हैं लोक!
यही धर्म के पैर है, जानों चौथा लोक!

चौथा लोक है आत्मा, यही है चौथा पैर!
यही "जीव" का लक्ष्य है, इसके बिना न खैर!!

तीन लोक में खण्ड है, सात - सात लो जान!
चौथा लोक अखण्ड है, यही अद्वैत है जान!!

सात चक्र तन में रहें, मन में सात प्रकाश!
सात धुनें है सुरत में, खण्ड - खण्ड ही भास!!

चौथा पद जो विलुप्त है, उसी को खोजे जीव!
मन के सन्मुख है अभी, सन्मुख होना पीव!!

जीव हो सन्मुख आत्म के, दोनों हो एकात्म!
यही अवस्था पीव है, सार यही अध्यात्म!!

जीव अंश है आत्म का, दोनों चेतन मान!
सन्मुख होना जीव को सहज दृष्टि से जान!!

आत्मा और परमात्मा, दोनों एक हैं जान!
आत्म को ही जानना, मोक्ष, मुक्ति सब मान!!

नर्क, स्वर्ग, अपवर्ग हैं, तन, मन, सुरत को जान!
यह तीनों है सीढ़ियाँ, यह पद द्वैत ही मान!!

प्रकृति, प्रकाश को मानते, अनहद, पुरुष है जान!
इन दोनों के मेल से, सृष्टि बनी है मान!!

**दृष्टा पुरुष और मैं यही, पद है सुरत का जान!
देती तो सब प्रकृति है, पुरुष की आज्ञा मान!!**

**किसी चीज में लिप्त हो, चीज न माया होय!
यही तुम्हारी लिप्तता, यह ही माया होय!!**

**कर्म, ज्ञान और भक्ति को, तन, मन, सुरत से जान!
आत्म को जाने बिना, जीव न लह विश्राम!!**

**तन से पूजा होत है, मन से होता ध्यान!
सुरत शब्द का योग यह, तीनों द्वैत है जान!!**

**क्रिया, कर्म और योग में, तुमको पड़ना नाहि!
इनसे अलग है आत्मा, इनसे मिलता नाहि!!**

**तुम खोजो अद्वैत को, वही सत्य का पंथ!
आत्म, परमात्म मिले, सभी कह गये ग्रंथ!!**

हमने क्या सीखा:-

- 1. सभी मन के सन्मुख हैं!**
- 2. सभी को आत्मा के सन्मुख होना है!**
- 3. इसी को अध्यात्म कहा गया है!**
- 4. जीव परिधि पर है!**
- 5. आत्मा केन्द्र पर है!**
- 6. जीव को परिधि से केन्द्र पर आना है!**
- 7. जब तक जीव की दृष्टि बदलकर केन्द्र की तरफ नहीं होगी तब तक यह आत्मा से विमुख है, कभी भी आत्मा को प्राप्त नहीं कर सकता!**
- 8. जीव, आत्मा का ही अंश है, जीव को आत्मा से विमुख नहीं होना चाहिए!**

9. वेद, शास्त्र सभी बताते हैं कि जीव को आत्मा से विमुख नहीं होना चाहिए! सबसे बड़ा पाप यही है!

10. काग भसुंडि जी ने भी गरुड़ जी को बताया सबसे बड़ा पाप विमुखता ही है!

11. सूत जी ने अट्ठासी हजार ऋषियों को बताया कि सबसे बड़ा भयंकर पाप आत्मा से विमुख होना ही है!

12. दुर्योधन ने स्वयं कहा है कि मेरी हार का कारण यही है कि मैंने कृष्ण को नहीं चुना!

13. सबसे बड़ा पुण्य आत्मा के सन्मुख होना है!

14. भवसागर से निकलने के लिए केवल सन्मुख होना ही उपाय है!

15. तीन लोक का ज्ञान काल और माया का ही ज्ञान है! इसलिए यह अज्ञान की श्रेणी में आता है, इससे आत्मा के सन्मुख नहीं हुआ जा सकता है!

16. [I] पहला लोक हमारा शरीर है, इसमें सभी इन्द्रियाँ काम करती हैं!

[II] दूसरा लोक मन है, इसमें बहुत से मत है यह मत काल का ही मत है इससे आत्मा नहीं प्राप्त हो सकती!

**मन के मते न चालिए, मन के मते अनेक!
जो मन पे असवार है, कोटिन में है एक!!**

[III] तीसरा लोक सुरत है, इससे सुरत - शब्द योग करके मंजिल को पार किया जाता है! परन्तु यह भी द्वैत है, खण्ड - खण्ड में है! इससे आत्मा के सन्मुख नहीं हुआ जा सकता है!

17. आत्मा और ईश्वर या परमात्मा एक ही है दो नहीं!

18. चौथा लोक आत्मा है, यही जीव का लक्ष्य है! यही मंजिल है!

19. द्वैत में नहीं फंसना है! अद्वैत को खोजना है!

20. मन का मार्ग छोड़ देना है, आत्मा के मार्ग पर चलकर सन्मुख होना है!

21. आत्मा ही सत्य है, यही सबसे पुरानी है, यही शाश्वत है! इसी को जानना हमारा धर्म है!

22. सहज होना है!

23. दृष्टि बदलकर केवल चौथे लोक को पहुँचना है! कहीं आना जाना नहीं है!

24. [I] जैसे ही इन्द्रियों से दृष्टि सहज करोगे!
[II] मन को शून्य करोगे!
[III] सुरत को ठहरा दोगे!

25. आत्मघट प्रकट हो जायेगा!

26. आत्मा की धार आत्मघट पर गिरने लगेगी!

27. आत्मा के सन्मुख जीव हो जायेगा!

28. यही निर्वाण पद है, यही परमात्मा है!

29. यही गुरूपद है!

30. इसी को सत्य पथ कहा गया है!

31. पूर्ण सतगुरू खोजकर, जीव की यात्रा पूर्ण करो!

32. जीव पीव बन जायेगा!

सुरेशादयाल
ब्रम्हज्ञान योग संस्थान
मोचकला बिसवां सीतापुर
[३० प्र०]
सम्पर्क सूत्र-- 9984257903